नागमती का वियोग वर्णन

बी•ए•प्रथम वर्ष, पत्र-1

मलिक मोहम्मद जायसी प्रेम प्रणयानुभूति और आध्यात्मिकता के रचनाकार है | इन्होंने 15 वीं- 16 वीं शताब्दी में 'पद्मावत' की रचना की | यह ठेठ अवधी भाषा में लिखा गया है | इसमें रत्नसेन और पद्मावती की प्रेमकथा का वर्णन है | जायसी ने लौकिक प्रेम के माध्यम से अलौकिक प्रेम की व्यंजना की है | 'पद्मावत' की प्रारंभिक कथा कल्पना पर आधारित तथा उत्तरार्द्ध की कथा ऐतिहासिक है | आचार्य रामचंद्र शुक्ल ने सूरदास तथा तुलसीदास के साथ अपनी त्रिवेणी नामक पुस्तक में इन्हें जगह देकर कालजयी रचनाकार की संज्ञा दी है | उन्होंने यह स्वीकार किया है कि पद्मावत में नागमती वियोग वर्णन श्रृंगार साहित्य में अद्वितीय वस्तु है | जायसी ने युद्ध तथा प्रेम को आमने-सामने रखकर प्रेम को जीवन के सार के रूप में प्रतिष्ठित करना चाहा है | ऐतिहासिक तथा लौकिक कथा के चित्रण के क्रम में उन्होंने एक तरफ भारतीय संस्कृति के पहलुओं को उद्घाटित करना चाहा है जिसमें रीति-रिवाज, लोकोत्सव त्यौहार, यात्रा शकुन, वनस्पतियों, हिंदुओं के देवी-देवताओं तथा टोने-टोटकों की भी चर्चा की गई है,तो दूसरी तरफ भारतीय साधना पद्धतियों के प्रभाव को भी दर्शाने का प्रयास किया गया है |

जायसी विरह वेदना के अमर गायक हैं |उनकी चितवृत्ति वियोग वर्णन में अधिक रमी है | इनके विरह वर्णन में वेदना की अधिकता, हृदय की दृढ़ता और संवेदनशीलता के साथ-साथ सरलता एवं प्रभावोत्पादकता भी विद्यमान है | महाकाव्य 'पद्मावत' में नागमती की विरह-वेदना के साथ-साथ पद्मावती की वियोग-कथा का भी निरूपण किया गया है | नागमती वियोग खंड, पद्मावती वियोग खंड, पद्मावती-नागमती विलाप खंड इस प्रकार के स्थल हैं जहां वेदना के विविध रूपों की झांकी अंकित की गई है | इनमें से सर्वाधिक प्रभावोत्पादक और मार्मिक विरह-वर्णन नागमती वियोग खंड के अंतर्गत किया गया है | नागमती का विरह-वर्णन सरस, गंभीर, निर्मल एवं पावन है |

चित्तौड़ का राजा रत्नसेन पद्मावती के सौंदर्य पर मुग्ध होकर उसे प्राप्त करने के लिए सिंहलद्वीप चला जाता है | इधर इसके वियोग में नागमती विरह व्यथित होकर अपने आंसुओं की धार में भावुक हृदय को निमग्न करने लगी है | वह एक आदर्श भारतीय रमणी है जो विरह व्यथित हृदय लिए हुए अपनी वेदना में सबको सहभागी बनाती है | वह एक ऐसी विरहिणी है जिसकी विरह व्यथा से सारा जगत जल रहा है | विरहिणी नागमती की विरहाग्नि अत्यंत तीव्र है | वह अखिल सृष्टि में व्याप्त है | वन, उपवन, आकाश, पाताल सब उसी आग में जल रहे हैं | उसी आग के धुंए से कौवा तथा भौंरा काला हो गया है -

"पिउ सौं कहेहु संदेसड़ा हे भौंरा, हे काग |

सो धनि विरहै जरि मुई तेहिक धुंआ हम लाग || "

नागमती का अपने पति के प्रति प्रेम, विरह में और अधिक प्रगाढ़ होता चला जाता है | उसे अपने प्रिय से कोई शिकायत नहीं है | वह जानती है कि उसका प्रिय किसी चतुर नागरी के वश में हो गया है, अन्यथा वह अब तक अवश्य लौट आता |

"नागर काहू नारि बस परा |

तेइ मोर पिउ मोसों हरा || "

जायसी ने नागमती का विरह-वर्णन बारहमासे की पद्धति पर किया है | बारहमासे का प्रारंभ भारतीय परंपरा के अनुरूप उन्होंने आषाढ़ मास से किया है | सावन का महीना लग गया है | सभी सखियां अपने प्रिय के साथ झूला झूल रही है किंतु नागमती का तो हृदय मात्र ही पति के वियोग में झूल रहा है जिसे विरह बार-बार झकझोर कर झूला देती है-

"सखिन रचा पिय संग हिंडोला

हरियर भूमि कुसुमी चोला |

हिय हिंडोल जस डोले मोरा

विरह झुलाइ देह झकझोरा || "

नागमती को सभी त्यौहार फीके लग रहे हैं | कार्तिक का महीना लग गया है, चारों ओर शरद ऋतु की चांदनी फैली हुई है, किंतु उस विरहिणी को वह चांदनी शीतल होने पर भी दाहक लग रही है | दीपावली का पर्व मनाया जा रहा है किंतु वह तो अपने प्रिय की प्रतीक्षा में आंखें बिछाए बैठी है |

"कातिक सरद चंद्र उजियारी

जग शीतल हौं विरहै जारी |

अबहूं निठुर आव एहि बारा

परब दिवारी होइ संसारा || "

जायसी ने बारहमासे के माध्यम से नागमती के हृदय की वेदना और पीड़ा का मार्मिक चित्रण तो किया हीं, अपितु नागमती के साथ प्रकृति की सहानुभूति और संवेदना का भी चित्रण किया है | पशु-पक्षी, लता-पुष्प आदि सभी नागमती के दुख के साथी बन गए हैं | वह अपनी पीड़ा इन्हें सुनाती है और उसके विरह संदेश को सुनकर पक्षी जलने लगते हैं तथा वृक्ष पत्र विहीन हो जाते हैं |

"जेहि पंखी के नियह है, कहै विरह कै बात |

सोई पंखी जाइ जरि, तरिवर होइ निपात || "

जायसी नागमती के विरह का संदेश एक पक्षी के माध्यम से ही सिंहलद्वीप में राजा रत्नसेन के पास पहुंचाते हैं | पद्मावत में फारसी का भी प्रभाव परिलक्षित होता है | मांस- मज्जा, रक्त-मवाद आदि का चित्रण कवि ने फारसी प्रभाव के कारण हीं किया है |

" विरह बान तस लाग न डोली

रक्त पसीज भीजि गई चोली | "

जायसी के विरह-वर्णन में वेदना, व्यथा एवं पीड़ा का अधिक्य है | वेदना का मार्मिक, निर्मल एवं पावन स्वरूप जायसी के काव्यों में जैसा मिलता है वैसा अन्यत्र दुर्लभ है | नागमती का विरह वर्णन हिंदी साहित्य की अनुपम निधि है |